प्रज्ञाश्रमणी
आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

बहुआयामी व्यक्तित्व की एक झलक

डॉ. अनुपम जैन

कु. माधुरी को आर्यिका चन्दनामती बनाने वाली कुशल शिल्पी,
विधान वाचस्पति, चारित्र चन्द्रिका, तीर्थोद्धारिका,
युग प्रवर्तिका, सिद्धान्त वाचस्पति, आर्यिकाशिरोमणि

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

के चरणों में शत शत नमन/वन्दन

डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के बहुआयामी व्यक्तित्व की एक झलक

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के प्रथम विशेष दीक्षान्त समारोह, 8.4.2012 में पूज्य माताजी को Ph. D.की मानद उपाधि प्रदान करने के अवसर पर प्रकाशित

डॉ. अनुपम जैन

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - गणित

शासकीय होल्कर स्वशासी विज्ञान महाविद्यालय

इन्दौर - 452001

anupamjain3@rediffmal.com

✻ प्रकाशक ✻

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ

डी-20, सुदामानगर, इन्दौर - 452009

0731-2797790, 4258410

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के स्वर्णिम जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर द्वारा संकलित/संपादित कर ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या वी.नि.सं. 2534 तदनुसार 3 जून 2008 को प्रथम बार एवं 8 अप्रैल 2012 को तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद द्वारा विश्वविद्यालय में आयोजित प्रथम विशेष दीक्षान्त समारोह में पूज्य माताजी को Ph.D. (Doctor of Philosophy) की मानद उपाधि प्रदान किये जाने के शुभ अवसर पर तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ, इन्दौर द्वारा पुनर्प्रकाशित। द्वितीय संस्करण - मार्च 2012

मुद्रक - सुगन ग्राफिक्स, इन्दौर। मूल्य रु. 10.00

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मना ।
स्व स्व चरित्रं शिक्षरेन पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

यदि हम जैन परम्परा के इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें यही ज्ञात होता है कि प्रत्येक तीर्थंकर के समवसरण में हजारों, लाखों की संख्या में मुनि एवं आर्यिकायें रहीं हैं। यदि भगवान आदिनाथ के समवसरण में 3,50,000 आर्यिकायें और 84,000 मुनि थे तो भगवान महावीर के काल में 36,000 आर्यिकायें और 14,000 मुनि थे, किन्तु राजनैतिक, सामाजिक प्ररिस्थितियों के कारण यह संख्या निरन्तर घटती चली गई तथा 10 वीं – 11वीं शताब्दी से लेकर 19 वीं शताब्दी तक मुनि परम्परा छिन्न-भिन्न हो गई, किन्तु आश्चर्य तो तब होता है जब किसी भी आर्यिका द्वारा लिखा गया कोई भी ग्रंथ 20 वीं शताब्दी ई. के पहले का प्राप्त नहीं होता है। अपवाद स्वरुप एक दो कन्नड़ रचनायें ही हैं। 20 वीं सदी में **चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज** ने विलुप्त होती मुनि परंपरा को पुनर्जीवित किया और गिरि कन्दराओं में निवास करने वाले, साधना के पथ पर अग्रसर किन्तु मूलाचार की व्यवस्थाओं से अनभिज्ञ, कतिपय आत्मार्थी व्रती बन्धुओं को श्रमण परंपरा की आचार संहिता का बोध कराया। इन्हीं युग प्रधान आचार्य की शिष्या, किन्तु स्वयं के समाधि का संकल्प ले लेने के कारण उनके ही निर्देश पर **आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज** से दीक्षित, कुमारी अवस्था से आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने वाली इस युग की प्रथम आर्यिका हैं **गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी।**

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने कुमारी अवस्था में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर एक अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया। जिसके फलस्वरूप देश में आज शताधिक ऐसी आर्यिकायें हैं जिन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश के पूर्व ही संसार की असारता का ज्ञान प्राप्त कर आर्यिका के महाव्रतों को अंगीकार किया किन्तु इस परम्परा का सूत्रपात करने वाली गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम शिष्या होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ **कु. माधुरी जैन** को, जो आज **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी** के रूप में अपनी

ज्ञान रश्मियों से दिग्दिगन्त को आलोकित कर रहीं हैं। ऐसी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर कुछ भी लिखना अत्यन्त दुष्कर है किन्तु प्रसंगोपात्त साधर्मी बन्धुओं के हित में किंचित परिचय प्रस्तुत करने की भावना से लिख रहा हूँ।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद के ग्राम टिकैत नगर में अग्रवाल दिगम्बर जैन जाति निवास करती है। इसी जाति के गौरव, गोयल गोत्रीय श्रेष्ठि श्री छोटेलाल जी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनीदेवी जी भी टिकैत नगर में ही निवास करती थी। आप श्री नौबतराय जैन के पुत्र श्री धन्य कुमार जैन के तीन पुत्रों, सर्वश्री बालचन्द, छोटेलाल एवं बब्बूमल में मंझोले थे। श्री छोटेलाल जी की कुल 13 संतानें हुई जिनके नाम क्रमशः निम्नवत् हैं।

1. कुमारी मैना जैन – पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (बाल ब्रह्मचारिणी)
2. श्रीमती शांति देवी जैन, लखनऊ
3. श्री कैलाश चन्द जैन सर्राफ, टिकैत नगर/लखनऊ
4. सौ. श्रीमती देवी जैन, बहराइच
5. कुमारी मनोवती जैन – चारित्र श्रमणी आर्यिकारत्न श्री अभयमती माताजी (बाल ब्रह्मचारिणी)
6. स्व. श्री प्रकाशचन्द जैन, टिकैतनगर/लखनउ
7. श्री सुभाषचन्द जैन, टिकैतनगर
8. श्रीमती कुमुदनी देवी जैन, कानपुर
9. कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन – (बाल ब्रह्मचारी)
10. श्रीमती मालती जैन, दिल्ली
11. श्रीमती कामिनी देवी जैन, दरियाबाद
12. कुमारी माधुरी जैन – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती (बाल ब्रह्मचारिणी)
13. श्रीमती त्रिशला जैन, लखनऊ

एक ही परिवार से 3-3 आर्यिकायें बनना और एक भाई का अष्टम प्रतिमाधारी बनकर कर्मयोगी की उपाधि प्राप्त करना यह सोचने को विवश करता है कि किन्हीं विशेष कारणों से परिवार विशेष को ही ऐसा सुयश प्राप्त होता है। यह धारणा और भी पुष्ट होती है जब हम पाते हैं कि माता मोहिनी देवी ने भी इस असार संसार को तिलांजलि देकर आचार्य श्री धर्मसागरजी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर स्वयं अपनी ही पुत्री के निर्देशन में समाधि की सफल साधना की। ऐसे महान पुण्यशाली परिवार में 18 मई 1958 तदनुसार ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या वीर निर्वाण संवत् 2484 को बारहवीं संतान के रूप में माधुरी का जन्म हुआ। जैन पुराणों का निरन्तर स्वाध्याय करने वाली माता मोहिनी ने आचार्य कुन्दकुन्द की माँ के समान माधुरी को भी बालपन में ही धर्म के संस्कार दे दिये थे, तभी तो महज 11 वर्ष की उम्र में जयपुर (राज.) में 25 अक्टूबर 1969 को 5 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं 13 वर्ष की आयु में सुगंध दशमी के पावन पर्व पर अजमेर की धर्मप्राण नगरी में आपने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया। कहते है पूत के पाँव पालने में ही नजर आने लगते है। अल्हड़ मस्त जवानी के जिन दिनों में बालिकायें खेलने-कूदने और मौज मस्ती करने में मग्न रहती हैं तब माधुरी ब्रह्मचर्य के साथ-साथ अपने स्वाध्याय से मेधा को सँवारने में लगी रहती थी। लगभग 13 वर्षों की साधना के बाद जब 1982 में जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति प्रवर्तन के निमित्त से पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी दिल्ली के मोरी गेट स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में चातुर्मास कर रही थी, तब आपने दो प्रतिमा के व्रत धारण किये तथा अगले 5 वर्षों में 5 और प्रतिमाओं के व्रतों को धारण करने का संकल्प करते हुए 1987 में सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किये। बहन माधुरी के मन में तो वैराग्य का भाव हिलोरे मार रहा था। ऐसे में उन्हें सप्तम प्रतिमा के व्रतों से कहाँ संतोष होने वाला था। 1969 से लेकर 1989 तक 20 वर्षों में ब्रह्मचारिणी बनकर जिस प्रकार आपने संघ की सेवा की, गुरु मुख से चारों अनुयोगों के ग्रंथों का अध्ययन किया और कर्म सिद्धांत के प्रति अपनी आस्था को बलवती करते हुए वैराग्य के भावों को पुष्ट किया। ऐसे उदाहरण विरले ही हैं। व्रतों का कठोरता से पालन करने/कराने में देश में विख्यात गणिनी ज्ञानमती माताजी ने अपनी इस शिष्या को जाँचा, परखा

तथा सब दृष्टियों से योग्य पाये जाने पर श्रावण शुक्ला ग्यारस तदनुसार 13 अगस्त 1989 को आर्यिका के महाव्रत प्रदान किये और इस प्रकार 20 वर्षों की साधना के बाद गणिनी ज्ञानमती सदृश कुशल शिल्पी के मार्गदर्शन में माधुरी चन्दनामती माताजी बन गई।

योजनाबद्ध ढंग से किया श्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। जिस प्रकार गंगा के थपेड़ों से कंकर शंकर बन जाता है उसी प्रकार गणिनी ज्ञानमतीजी के कठोर अनुशासन और गहन अध्ययन की पाठशाला में माधुरी के ज्ञान में जो निखार आया वो आज चहुँ ओर प्रकट हो रहा है। अपने पूर्व नाम के अनुरूप उनकी वाणी में माधुर्य तो शुरू से ही था किन्तु माता ज्ञानमतीजी के ज्ञान और चन्दना की शीतलता का परिपाक होने से एक ऐसा सुयोग बना कि आज भौतिकता की चकाचौंध में भटकता युवा चन्दनामती जी के पास अपनी ज्वलंत समस्याओं का शीतल समाधान पाने खिंचा चला आता है। 1989 से लेकर 2011 तक के गणिनी ज्ञानमती माताजी के साथ सम्पन्न 23 चातुर्मास चन्दनामतीजी के द्वारा की गई लम्बी-लम्बी पद यात्राओं की कहानी खुद ही कहते हैं। उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र, दिल्ली आदि चार प्रान्तों में फैले इन वर्षायोग स्थलों की सूची जरा हम भी देखें -

1. पहला चातुर्मास, 1989- जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
2. दूसरा चातुर्मास, 1990-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
3. तीसरा चातुर्मास, 1991-सरधना, जिला-मेरठ
4. चौथा चातुर्मास, 1992-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
5. पाचवाँ चातुर्मास, 1993-अयोध्या तीर्थ
6. छठाँ चातुर्मास, 1994-टिकैत नगर, बाराबंकी
7. सातवाँ चातुर्मास, 1995-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
8. आठवाँ चातुर्मास, 1996-मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
9. नवाँ चातुर्मास, 1997-लाल मंदिर, चाँदनी चौक-दिल्ली
10. दसवाँ चातुर्मास, 1998-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

11. ग्यारहवाँ चातुर्मास, 1999-राजा बाजार, कनाट प्लेस-नई दिल्ली
12. बारहवाँ चातुर्मास, 2000-कमल मंदिर, प्रीत विहार-दिल्ली
13. तेरहवाँ चातुर्मास, 2001-अशोक विहार, फेस-1-दिल्ली
14. चौदहवाँ चातुर्मास, 2002-प्रयाग-इलाहाबाद
15. पन्द्रहवाँ चातुर्मास, 2003-कुण्डलपुर, नालंदा
16. सोलहवाँ चातुर्मास, 2004-कुण्डलपुर, नालंदा
17. सत्राहवाँ चातुर्मास, 2005-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
18. अठारहवाँ चातुर्मास, 2006-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
19. उन्नीसवाँ चातुर्मास, 2007-जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
20. बीसवां चातुर्मास, 2008 - जम्बूद्वीप - हस्तिनापुर
21. इक्कीसवां चातुर्मास, 2009 - जम्बूद्वीप - हस्तिनापुर
22. बाइसवां चातुर्मास, 2010 - जम्बूद्वीप - हस्तिनापुर
23. तेइसवां चातुर्मास, 2011 - जम्बूद्वीप - हस्तिनापुर

इसके अतिरिक्त चातुर्मास से इतर अवधि में माताजी के छोटे-बड़े अनेक विहार होते रहते हैं। जैसे 1995-96 में जम्बूद्वीप से दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश होते हुए आप महाराष्ट्र गई तो वापसी में गुजरात, राजस्थान होकर दिल्ली पधारी एवं दिसम्बर 07 एवं जनवरी 08 की कड़कड़ाती सर्दी में माताजी उत्तर प्रदेश के बरेली जनपद में स्थित प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र अहिच्क्षेत्र पार्श्वनाथ, गुरु माँ के साथ गई और वहाँ महामस्तकाभिषेक के कार्यक्रम को अपना सान्निध्य प्रदान किया। पूज्य माताजी के व्यक्तित्व के विशिष्ट पहलुओं तथा साहित्यिक एवं सामाजिक अवदान के बारे में लिखना अत्यन्त दुष्कर है लेकिन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के संघ के साथ 1981 से अनवरत के रूप से जुड़े होने के कारण मैने माधुरी जी और चन्दनामती जी दोनों को नजदीक से देखा है। यह संभव है कि अपनी सीमित शक्तियों के कारण मैं उनके व्यक्तित्व की उँचाईयों की थाह न ले पाया हूँ लेकिन जो भी मैंने देखा, जाना और समझा उसे मैं कुछ

बिन्दुओं में समाहित करने का प्रयास कर रहा हूँ। कतिपय प्रमुख बिन्दु निम्नवत् हैं -

अनन्य गुरुभक्त – ग्रहस्थाश्रम की बड़ी बहिन एवं जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को आपने 1969 में गुरु के रूप में स्वीकार कर त्याग/अध्ययन की ओर कदम बढ़ाया हुई। 1969 से तो आप से सतत छाया के समान पूज्य माताजी की के संघ में रहकर आगमों का गुरु मुख से अध्ययन तो कर ही रही हैं। पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के संघ की निर्विकल्प सेवा आपकी अनन्य गुरु भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। आपने अपने अर्जित ज्ञान का सदुपयोग भी आत्म कल्याण के अतिरिक्त गुरु भक्ति एवं गुरु गुण लेखन में ही बहुलता से किया है।

आर्ष परम्परानुयायी – बहुत कुछ लिखने के बावजूद आचार संहिता में बहुत सी बातें अलिखित रह जाती हैं। दुनिया का कोई भी संविधान सभी दृष्टियों से कभी पूर्ण नहीं बन पाया। यही कारण है कि अनेक निर्णय परम्परा के आधार पर लिये जाते हैं। चरित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की परम्परा में दीक्षित होने के कारण इस गुरु परम्परा का आप सदैव गौरव पूर्वक स्मरण करती हैं तथा गुरु परम्परा द्वारा स्थापित रीतियों, परम्पराओं का अनुपालन करती हैं।

आशुकवियत्री – पूज्य बड़ी माता जी द्वारा किसी भी धार्मिक आयोजन की प्रेरणा दी जाये, आर्यिका चन्दनामती जी तत्काल उस पर भजन बना देती हैं। इन भजनों में जहाँ एक ओर गेयता होती है वही दूसरी ओर इनमें धर्म, दर्शन, अध्यात्म एवं इतिहास के तत्व छुपे रहते हैं। जन-जन में प्रचार या जुड़ाव तो होता ही है। भजन, आरती, चालीसा एवं पूजा बनाने में आपको इतना आनन्द आता है कि वे इसमें डूब जाती हैं। पौराणिक कथानकों एवं प्रथमानुयोग के प्रसंगों का विस्तृत ज्ञान तथा करणानुयोग/द्रव्यानुयोग की समझ होने के कारण उनके द्वारा रचे गये भजन, पूजायें आदि जैन साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इनमें साहित्यिक सौष्ठव एवं विषय का गाम्भीर्य समान रूप से होता है।

प्रभावी वक्ता – आगम ग्रंथों तथा सम सामयिक साहित्य के गहन अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं स्वरचित भजनों/मुक्तकों से युक्त आपके प्रवचन /उद्‌बोधन युवा पीढ़ी को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। बड़ी से बड़ी सभा को मंत्रमुग्ध करने की आपमें अपूर्व क्षमता है। आपके प्रवचन इतने सटीक, सुसंगत एवं क्रमबद्ध होते हैं कि प्रवचनोपरान्त प्रत्येक श्रोता के पास सोचने, विचारने एवं आचरण करने हेतु कुछ न कुछ सामग्री होती हैं। विषय की सरलता, लयबद्धता एवं प्रभावोत्पादकता आपकी विशेषता हैं।

कुशल लेखिका – काव्य रचना आपकी मौलिक प्रतिभा है फलतः आपकी कृतियों में भजन संग्रह, आरती संग्रह, चालीसा संग्रह, पूजाओं का बाहुल्य है तथापि आपने कुछ अत्यन्त गम्भीर प्रकृति के कार्य किये हैं जिनमें सर्वोपरि है सिद्धान्त ग्रंथ षट्‌खण्डागम की गणिनी ज्ञानमती माताजी कृत सिद्धान्त चिन्तामणि शीर्षक संस्कृत टीका की हिन्दी टीका। षट्‌खण्डागम की घवला टीका के 5 खंड़ों को समाहित करने वाली 16 पुस्तकों की माताजी कृत सिद्धान्त चिन्तामणि शीर्षक संस्कृत टीका तो पूर्ण हो चुकी है किन्तु हिन्दी टीका का कार्य चल रहा है। सम सामायिक विषयों पर आपके दर्जनों लेख तथा कई शोधपूर्ण आलेख भी विविध पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं।

सिद्धहस्त सम्पादिका – संस्थान के प्रथम पीठाधीश स्व. क्षुल्लक श्री मोतीसागरजी एवं वर्तमान पीठाधीश स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के सम्पादकत्व में निकलने वाली सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका के कुशल संयोजन में आपका सहयोग तो रहता ही है आर्यिका रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ, आचार्य वीरसागर स्मृति ग्रंथ, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ आपकी सम्पादन कला में प्राणीण्य की कहानी कहते हैं। मार्च 2008 में विमोचित चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती-जीवनयात्रा को आपके द्वारा ही संवारा गया है। भगवान महावीर हिन्दी - अंग्रेजी जैन शब्दकोश की वाचना में मैंने स्वयं पूज्य माताजी की सूक्ष्म दृष्टि, ज्ञान की पिपासा एवं अध्ययन के गाम्भीर्य का अवलोकन किया है।

दूददृष्टि सम्पन्न संघ संचालिका – पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी के संघ में वर्तमान में आपके अतिरिक्त चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री सुव्रतमती माताजी, आर्यिका श्री सुदृढ़मती माताजी,

क्षुल्लिका श्री शांतिमतीजी, ब्र. बीना जैन, ब्र. सारिका जैन, ब्र. इन्दु जैन, ब्र. अलका जैन, ब्र. प्रीति जैन, ब्र. स्वाति जैन, ब्र. मंजू जैन, ब्र. दीपा जैन, ब्र. बाला जैन एवं ब्र. कुसुम जैन भी साधनारत् हैं। इतने विशाल संघ का पूज्य माताजी की आज्ञा एवं आदेश के अनुरूप संचालन एवं नियंत्रण करना आपके प्रबंध कौशल तथा संघ संचालन में निपुणता को व्यक्त करता है।

आपकी इन विशेषताओं के कारण उनका सामाजिक एवं साहित्यिक अवदान अत्यन्त विशिष्ट हो गया है। सामाजिक पुनर्रचना के अनुष्ठान में आपने केन्द्र बिन्दु बनाया युवा पीढ़ी को। दीक्षा पूर्व आपने अपनी शास्त्र सभाओं एवं शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से युवाओं को संस्कारित करने तथा उनमें धर्म के प्रति व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने का महती कार्य किया। **धर्म से कोसों दूर रहने वाला युवा जो धर्म को पाखण्ड एवं ढ़कोसला कहता है, जब आपके सम्पर्क में आता है तो वह जान पाता है कि धर्म एक जीवन शैली है जिसे अपनाकर तनाव मुक्त जीवन जिया जा सकता है। इससे जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है। समाज में सार्थक कर पाने का संतोष उपजता है एवं मिलती है वर्तमान से संतुष्टि, अहसास होता है जाति एवं कुल के गौरव का, जागती है कुछ कर गुजरने की तमन्ना तथा निखरता है आत्म विश्वास। सम्प्रति आपने ध्यान करने एवं सिखाने की ऐसी रीति विकसित की है जो परम्परानुमोदित तो है किन्तु उसकी प्रस्तुति है सरल, सहज एवं बोधगम्य।**

आज पूरे देश में इस बात की ख्याति है कि माताजी (पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी) जिस काम को हाथ में लेती हैं वह पूर्ण होता है। वे किसी काम को अधूरा नहीं छोड़ती हैं। वास्तव में माताजी की योजनाओं की पूर्णता के मूलाधार 4 स्तम्भ रहे हैं।

1. पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (स्वयं)
2. पूज्य आर्यिकाश्री चन्दनामती माताजी
3. पूज्य स्व. क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी
4. कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमारजी जैन (वर्तमान में स्वस्ति श्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी)

पूज्य चन्दनामती जी के इतने सामाजिक अवदान के साथ ही उनके साहित्यिक अवदान भी कम नहीं हैं यदि उनकी कृतियों का मूल्यांकन/समीक्षा करने लग जाये तो एक प्रबन्ध बन जायेगा फलतः हम यहाँ मात्र उनकी कृतियों की सूची प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का साहित्य

01. षट्खण्डागम, भाग-1 - हिन्दी टीका
02. षट्खण्डागम, भाग-2 - हिन्दी टीका
03. षट्खण्डागम, भाग-3 - हिन्दी टीका
04. षट्खण्डागम, भाग-4 - हिन्दी टीका
05. षटखण्डागम, भाग-5 - हिन्दी टीका
06. षटखण्डागम, भाग-6 - हिन्दी टीका
07. षटखण्डागम, भाग-7 - हिन्दी टीका
08. महावीर स्तोत्र : संस्कृत - हिन्दी टीका
09. ज्ञानज्योति की भारत यात्रा
10. जैनधर्म प्रश्नोत्तर माला
11. ध्यानसाधना
12. ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव
13. महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-वास्तविक तथ्य
14. कुण्डलपुर महोत्सव स्मारिका
15. भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश (संकलनकर्त्री)
16. चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी - जीवनयात्रा
17. आओ जाने ! तेरहद्वीप रचना में क्या-क्या है ?
18. तेरहद्वीप रचना
19. भगवान पार्श्वनाथ चित्रकथा (अंग्रेजी अनुवाद सहित)
20. ज्ञान रश्मि (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
21. जम्बूद्वीप रचना गाईड (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)

22. अष्ट मूलगुण (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
23. रानी त्रिशला के अनोखे सपने (नाटक)
24. महासती चंदना (नाटक)
25. धन्य हुआ विपुलाचल पर्वत (नाटक)
26. ऋषभदेव दशावतार (नाटक)
27. ऋषभदेव नृत्य नाटिका
28. सच्चा वैराग्य बना इतिहास (नाटक)
29. पूनो का चाँद (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
30. अवध की अनमोल मणि
31. गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन एवं भजन
32. An Introduction to Ganini Gyanmatiji (Eng.)
33. ज्ञानमती पुष्पांजलि
34. सचित्र ज्ञानाञ्जलि
35. संस्कृत साहित्य के विकास में श्री ज्ञानमती माताजी का योगदान
36. गणिनी ज्ञानमती महापूजा
37. गणिनी ज्ञानमती बारहमासा
38. स्वर्णिम व्यक्तित्व की धनी-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी
39. गणिनी ज्ञानमती-परिचय एवं प्रश्नोत्तरी
40. चारित्रचन्द्रिका
41. अमूल्य प्रवचन
42. ज्ञानमती माताजी की अमृतवाणी
43. भजन संग्रह (संकलनकर्त्री - ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
44. जम्बूद्वीप भजन संग्रह (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
45. जिनभजन कुसुमाञ्जलि
46. जम्बूद्वीप भजन संग्रह, भाग - 2
47. जम्बूद्वीप भजन संग्रह, भाग - 3
48. महावीर भक्ति प्रसून

49. कुण्डलपुर भजन संग्रह
50. प्रयाग तीर्थ पूजा
51. कुण्डलपुर तीर्थ परिचय एवं पूजा
52. पावापुर सिद्धक्षेत्र पूजा
53. राजगृही तीर्थ परिचय एवं पूजा
54. वाराणसी तीर्थ परिचय एवं पूजा
55. काकन्दी तीर्थ परिचय एवं पूजा
56. मातृभक्ति (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री - सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
57. सुमेरु वंदना (ब्र. (कु.) माधुरी शास्त्री-सम्प्रति आर्यिका चंदनामती)
58. भगवान ऋषभदेव चालीसा
59. भगवान ऋषभदेव पूजन एवं चालीसा
60. श्री जिनार्चना
61. आर्यिका रत्नमती परिचय एवं पूजन
62. चालीसा संग्रह एवं रविव्रत पूजा
63. समवसरण पूजन एवं चालीसा
64. आचार्य शांतिसागर पूजन
65. तीनमूर्ति पूजा
66. आरती संग्रह
67. कुन्दकुन्द मणिमाला पद्यानुवाद
68. समयसार गाथा पद्यानुवाद
69. समयसार कलश पद्यानुवाद
70. भगवान महावीर चालीसा
71. सरस्वती महापूजा (संकलनकर्त्री)
72. श्री षट्खण्डागम ग्रंथ पूजा
73. Rishabhdev Nirvan Mahotsava (Eng.)
74. Jain Dharm and Lord Rishabhdev (Eng.)
75. Shri Mahavir Puja (Eng.)
76. Worship (Pooja)

विधान

77. श्री भक्तामर मण्डल विधान
78. मनोकामना सिद्धि विधान
79. तीर्थंकर जन्मभूमि विधान
80. कल्याण मंदिर विधान
81. नवग्रहशांति विधान
82. समयसार विधान
83. सोलहकारण विधान
84. दशलक्षण विधान
85. एकीभाव स्तोत्र विधान
86. पंचकल्याणक तीर्थ विधान

सम्पादित ग्रंथ

87. आर्यिका रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ
88. आचार्य वीरसागर स्मृति ग्रंथ
89. गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती अभिनंदन ग्रंथ
90. कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ
91. भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ
92. गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ

अप्रकाशित ग्रंथ

93. षट्खण्डागम, भाग-9 की हिन्दी टीका
94. षट्खण्डागम, भाग-10 की हिन्दी टीका
95. षट्खण्डागम, भाग-11 की हिन्दी टीका
96. षट्खण्डागम, भाग-12 की हिन्दी टीका
97. मदन पराजय (कामदेव - जिनदेव का संग्राम)
98. नारायण श्री कृष्ण
99. शाश्वत तीर्थ अयोध्या
100. ऋषभदेव चरितम् - हिन्दी टीका

101. तत्वार्थ सूत्र प्रश्नोत्तरी

102. द्रव्य संग्रह प्रश्नोत्तरी

103. छहढ़ाला प्रश्नोत्तरी

104. तीर्थंकर जन्मभूमि परिचय

105. आचार्य वीरसागरजी - एक स्वर्णिम व्यक्तित्व

106. जम्बूद्वीप चित्रकथा

107. भगवान ऋषभदेव चित्रकथा

108. भगवान महावीर चित्रकथा

109. भगवान महावीर जीवनदर्शन

110. गणिनी ज्ञानमती जीवनदर्शन (सचित्र)

111. गणिनी ज्ञानमती चित्रकथा

- विशेष -

उपरोक्त साहित्य के अतिरिक्त -

1. सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका में प्रतिमाह प्रकाशित होने वाले विविध आलेख, भजन इत्यादि,
2. आचार्य कुन्दकुन्द पूजा, वीर निर्वाण संवत्सर पूजा, अष्टसहस्री पूजा, सहस्रकूट पूजा, पंचम पट्टाचार्यश्री श्रेयांससागर महाराज पूजा (संस्कृत एवं हिन्दी) पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी पूजा (संस्कृत एवं हिन्दी)
3. भगवान ऋषभदेव, भगवान महावीर, समवसरण, पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी एवं पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की संस्कृत स्तुतियाँ,
4. अंग्रेजी भाषा में विविध भजन, बारह भावना, तीर्थंकर जन्मभूमि वंदना, भगवान ऋषभदेव पूजन, पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती पूजा इत्यादि भी उल्लेखनीय है।

पूज्य माताजी द्वारा लिखित णमोकार चालीसा, सम्मेदशिखर टोंक वंदना एवं नवग्रहस्तोत्र तो सम्पूर्ण जैन समाज में विशेष प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

51वें जन्म दिवस की विनयांजलि सभा में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामतीजी के उद्गार

मुझे अपने जन्मदिवस पर इस प्रकार की विनयांजलि सभा का आयोजन करना अत्यन्त औपचारिक महसूस हो रहा है। उन्होंने कहा कि मुझे कभी भी ख्यातिलाभ अर्थात् स्वयं की पूजा की अभिलाषा नहीं रहे, ऐसी कृपा बनी रहे। मैं तो गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की चरणरज हूँ सदैव गुरु की कृपा में अपने जीवन को न्यौछावर करते हुए मोक्षपद की प्राप्ति कर सकूँ, ऐसे आशीर्वाद की कामना करती हूँ। उन्होंने कहा कि मेरा जन्म अमावस को हुआ है इस बात पर हर्ष मुझे इसलिए है कि मैं सदैव पूर्णिमा से ज्ञान प्रकाश की प्राप्ति करती रहूँ और एक दिन इस जन्म-मरण रूपी अंधकार से विमुक्त होकर मोक्ष रूपी उजियाले की प्राप्ति करूँ। जब खाली बाल्टी कुएँ के अंधकार में जाती है, तभी वह दोबारा भरकर उपर आती है। इसी प्रकार मुझे भी सदैव खाली बाल्टी में भरे हुए जल के समान पूज्य माताजी से ज्ञानरूपी अमृत की प्राप्ति होती रहे और उनके साथ क्षण-क्षण व्यतीत करते हुए मोक्षगमन तक मुझे उनका सान्निध्य प्राप्त रहे यही मेरी कामना है।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर कतिपय उद्गार

चन्दनामती! सदैव धर्माराधना के माध्यम से अपनी आत्मा का उत्थान करो एवं समाज को भी समुन्नत बनाने में अपना योगदान देती रहो।

– गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती

---*---

गुरुओं का जन्मदिवस आदि उनके गुणों का स्मरण करने के लिए मनाया जाता है। आप सब चन्दनामती के जीवन से शिक्षा ग्रहण करें।

– चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती

---*---

जब वे माधुरी के रूप में थी, तब उनके अंदर सदैव माधुर्य गुण विद्यमान रहा, पुनः जब वे चंदनामती बन गई, तब उनमें चंदन सी शीतलता, महकता एवं शांति का व्यवहार प्रतीत होता है। क्योंकि चंदन को यदि काटा भी जाता है तो वह काटने वाले को भी अपने समान खुशबू प्रदान कर देता है, यह चंदन की विशेषता होती है। इसी प्रकार आर्यिका चंदनामती माताजी की गुणवत्ता भी शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है अपितु सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है।

– स्व. पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी का रचना संसार

मौलिक / अनूदित / सम्पादित प्रमुख कृतियाँ

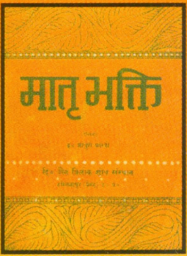

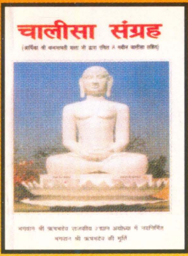

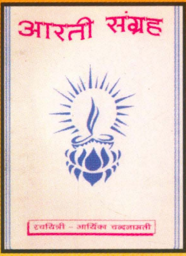

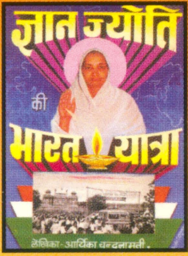

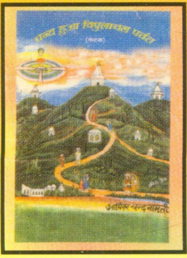

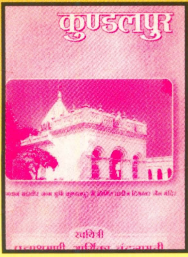

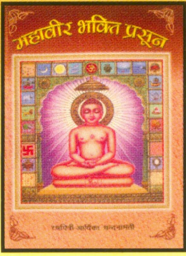

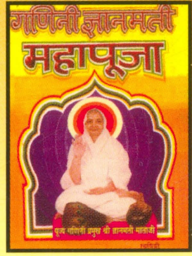

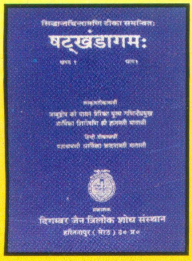

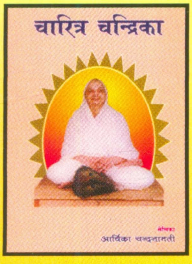

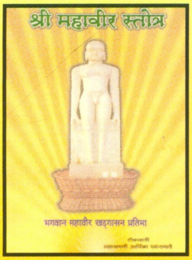

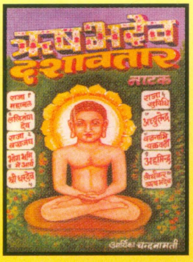

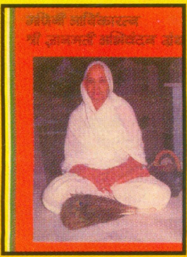

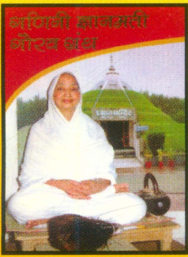

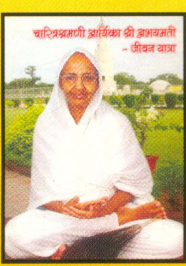

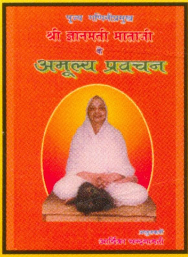

आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी - एक दृष्टि

जन्म नाम	:	कु. माधुरी जैन
जन्म तिथि	:	18 मई 1958, ज्येष्ठ अमावस्या, वी.नि. सं. 2484
जन्म स्थान	:	टिकैतनगर जि. बाराबंकी (उ.प्र.)
माता का नाम	:	श्रीमती मोहिनी देवी (आर्यिका दीक्षोपरान्त आर्यिका श्री रत्नमती माताजी)
पिता का नाम	:	श्री छोटेलाल जैन, टिकैतनगर
भाई	:	4 (कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन सहित)
बहिन	:	8 (गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं चारित्रश्रमणी श्री अभयमती माताजी सहित)
लौकिक शिक्षा	:	हाईस्कूल
धार्मिक अध्ययन	:	शास्त्री (1972), विद्यावाचस्पति (1973) आदि
ब्रह्मचर्य (5 वर्षीय)	:	25.10.69, जयपुर
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत	:	1971, सुगंधदशमी, अजमेर
व्रत प्रदात्री	:	आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी
द्वितीय प्रतिमा के व्रत	:	1982, मोरी गेट (दिल्ली)
सप्तम प्रतिमा के व्रत	:	1987, हस्तिनापुर (मेरठ)
आर्यिका दीक्षा	:	13 अगस्त 1989, श्रावण शुक्ला ग्यारस, वी.नि.सं. 2515
दीक्षा स्थल	:	जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ)
गुरु	:	गणिनी आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी
दीक्षोपरान्त नाम	:	आर्यिका चन्दनामती
प्रज्ञाश्रमणी उपाधि	:	13 अक्टूबर 1997, चौबीस कल्पद्रुम विधान के अवसर पर दिल्ली में
सामाजिक अवदान	:	वैश्वीकरण के वर्तमान युग में पाश्चात्य संस्कृति के दुष्प्रभावों से समाज को यथा संभव मुक्त कराने एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना हेतु शिक्षण शिविरों का आयोजन, प्रभावी वक्तृत्व शैली एवं मधुर कंठ के माध्यम से युवाओं को समाज से जोड़ना।
साहित्यिक अवदान	:	शताधिक पुस्तकों का सृजन/सम्पादन एवं अनुवाद

Sugan/0930 212 55 94